मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2021 marumegh
ISSN:2456-2904

छोटी धान्य फसलें

[1]विजय शर्मा [2]रूमाना खान, [3]विनिता दाहिमा, एवं [3]देवाराम मेघवाल
[1] अनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा
[2] अनुवांशिक एवं पादप विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, झांसी
[3] राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

छोटे अनाज वाली फसलों के दानों का आकार इनके पौधों की अपेक्षा छोटा होता हैं, जैसे– कांगणी, साँवा, चीना, मंडुवा (रागी, माल) कोदों आदि। फसलोत्पादन की सीमित सुविधाएं तथा जहाँ पर दूसरी मुख्य अन्न की फसलें सुगमतापूर्वक नहीं ली जाती हैं। इन फसलों में सूखा व अकाल को सहन करने की क्षमता होती है। इन फसलों पर सामान्यतया कीट–पतंगों व बीमारियों का प्रकोप बहुत कम होता है। लम्बी अवधि तक भण्डारण करने पर भी कीड़े नहीं लगते हैं। सभी लघु अन्न वाली फसलों से रोटी तथा इनके दानों को सीधा उबालकर चावल की तरह भी खाया जाता है।

ये फसलें दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में उगाई जाती हैं। राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्रों में (उदयपुर, बांसवाड़ा, डूँगरपुर, सिरोही, प्रतापगढ़) तथा अरावली पर्वतमाला की ढलाऊ जमीन में लघु अन्न की फसलें उगाई जाती हैं।

छोटे खाद्यान्न की उन्नत किस्में

1. कांगणी

गवरी : इसके बीज बड़े चमकदार व क्रीम रंग के होते हैं। यह 75–80 दिन में पक जाती है। यह उन्नत किस्म 15 से 16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार देती है एवं 40–50 क्वि. सूखे चारे की उपज भी प्राप्त होती है।

मीरा : कांगणी की यह किस्म मध्यम ऊँचाई (105–110 से.मी.) की द्विउपयोगी (दानें एवं चारे के लिए) उन्नत प्रजाति है। इसके दानों की पैदावार 15–17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है एवं सूखे चारे की उपज 46–50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म 75–80 दिन में पक जाती है और मृदुरोमिल आसिता रोगरोधी है। इसका बीज बड़ा व क्रीम रंग लिये होता है। मीरा का दाना एवं चारा उत्तम गुणवत्तायुक्त एवं पौष्टिक होता है।

प्रताप कांगणी–1 : यह एक लम्बी (120–130 से.मी.) द्विउपयोगी (दानें एवं चारे के लिये) चौड़े पत्तों वाली अति शीघ्र पकने वाली उन्नत किस्म है (65–68 दिन)। दानो की पैदावार 16–18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं सूखे चारे की उपज 46–50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। यह किस्म विभिन्न रोग एवं कीट प्रतिरोधी है, जो सूखा सहन कर सकती है। इसके बीज बड़े व क्रीम रंग लिये होते हैं।

2. चीना

के–1 : यह किस्म 70–75 दिन में पक जाती है। पौधों की ऊँचाई लगभग 85 से.मी. होती है तथा 12–15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दाना तथा 35–45 क्विंटल प्रति हेक्टेयर भूसा प्राप्त होता है।

प्रताप चीना : यह एक लम्बी (110–115 से.मी.) द्विउपयोगी (दाने एवं चारे के लिये) अतिशीघ्र पकने वाली तथा राजस्थान के छोटे (लघु खाद्यान्न) उगाये जाने वाले क्षेत्रों के लिए उपयोगी चीना किस्म है।

पी.आर.–18 : यह किस्म 65–67 दिन में पक जाती है तथा इसकी पत्तियाँ चौड़ी एवं पुष्पगुच्छ वाली (सिट्टे) लम्बी, अर्द्ध घनी होती हैं। इसके दानों की पैदावार 15–17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है एवं सूखे चारे की उपज 48–50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

3. सावाँ

के–1 : सावाँ की यह उन्नत किस्म 95 दिन में पक जाती है। यह 15–17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दानों की पैदावार देती हैं तथा 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सूखा चारा प्राप्त होता है।

प्रताप सावाँ : यह एक लम्बी (125–130 से.मी.) द्विउपयोगी तथा अर्द्ध घने सिट्टे युक्त (15–20 से.मी.) सावाँ किस्म है। पौधों की पत्तियाँ चौड़ी होती हैं तथा प्रत्येक पौधे में 4–5 कल्लें फूटते हैं। इसके दानों की पैदावार 15–17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

खेत की तैयारी

भूमि को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा 2 से 3 बार हल या हैरो से जोत लेना चाहिए।

बीजोपचार

हल्के बीजों को निकालने के लिए बीज को 2 प्रतिशत नमक के घोल में डालकर भली प्रकार हिलायें। घोल के ऊपर तैरते हल्के बीजों को निकाल देवें तथा शेष बचे बीजों को साफ पानी से धोकर सुखा लें। जहाँ फसलों में कण्डवा रोग आता हो, इसके लिये 2 ग्राम बिटावैक्स अथवा कार्बेन्डाजिम से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें।

बीज दर एवं बुवाई

1. बोने का समय : इन फसलों की बुवाई जून के अन्तिम सप्ताह से अन्त जुलाई तब जब भी खेत में पर्याप्त नमी हो, की जाती है।
2. बीज की मात्रा : (अ) सावाँ, कांगणी, चीना–8 से 10 किलो प्रति हेक्टेयर।
3. बोने की विधि : साधारण बीज को 25 से.मी. दूरी पर कतारों में बोना चाहिए। बीज को लगभग 3 से. मी. की गहराई पर बोयें।

खाद एवं उर्वरक

इन फसलों को प्रति हेक्टेयर लगभग 40 से 60 किलो नत्रजन की आवश्यकता पड़ती है। यदि भूमि में फॉस्फोरस की कमी हो तो 20 किलो फॉस्फोरस प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के पहले खेत में छिड़क कर मिला देना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय तथा बची हुई मात्रा निराई–गुड़ाई के बाद देवें। जैव उर्वरक को बुवाई से 10–15 दिन पहले छिड़क कर अच्छी तरह खेत में मिला देवें।

कटाई–गहाई

फसल पकते ही काट लेवें अन्यथा बीज गिर जाने पर उपज में नुकसान होने की संभावना रहती है।

फसल संरक्षण

कण्डवा रोग : इस रोग से बाली में काले रंग के चूर्ण जैसे कवक बीजाणु मर जाते हैं। प्रारम्भ में कवक के बीजाणु एक हल्के पीले रंग की झिल्ली से ढके रहते हैं जो बाद में फट जाती है तथा बीजाणु बाहर निकल जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए विटावेक्स 2 ग्राम/किलो बीज की दर से बीजोपचार करना आवश्यक है।